EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

'वसुधैव कुटुम्बकम' के आलोक में प्राचीन नालंदा महाविहार की शिक्षा प्रणाली: 'विकसित भारत @2047' हेतु उच्च शिक्षा का एक ऐतिहासिक व दार्शनिक विश्लेषण

ओम सुरेश शिंदे
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल तिबरेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान-333010

सारांश

भारतीय संस्कृति का उद्घोष "वसुधैव कुटुम्बकम" (संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार है) केवल एक आदर्श वाक्य नहीं, बल्कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का व्यावहारिक आधार था। यह शोध पत्र प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय (महाविहार) का एक विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसे विश्व के प्रथम आवासीय अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त था। यह पत्र विश्लेषण करता है कि कैसे नालंदा ने 5वीं से 12वीं शताब्दी के बीच भाषा, भूगोल और नस्ल की सीमाओं को मिटाकर ज्ञान का एक 'वैश्विक परिवार' बनाया था। प्रस्तुत शोध में नालंदा की प्रवेश प्रक्रिया, बहु-विषयक पाठ्यक्रम, और गुरु-शिष्य परंपरा का मूल्यांकन किया गया है। साथ ही, यह पत्र नालंदा के दुखद विध्वंस और ज्ञान की हानि पर भी प्रकाश डालता है। इसका उद्देश्य यह रेखांकित करना है कि 'विकसित भारत @2047' और विश्व शांति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, आधुनिक उच्च शिक्षा संस्थानों को नालंदा के 'समावेशी', 'तर्कसंगत' और 'शांति-केंद्रित' मॉडल को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

Keywords : नालंदा महाविहार, वसुधैव कुटुम्बकम, उच्च शिक्षा, विकसित भारत @2047, वैश्विक शांति, बहु-विषयक शिक्षा, भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS)।

प्रस्तावना:-

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जब दुनिया संघर्षों, युद्धों और विभाजनों से जूझ रही है, भारत का प्राचीन दर्शन "वसुधैव कुटुम्बकम" शांति और सद्भाव की एक नई आशा बनकर उभरा है। जी-20 की अध्यक्षता के दौरान भारत ने इसी मंत्र के साथ विश्व को एक परिवार के रूप में देखने का आह्वान किया। वर्ष 2047 तक भारत को एक 'विकसित राष्ट्र' बनाने के संकल्प में उच्च शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में, प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय का इतिहास हमारे लिए केवल गौरव का विषय नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ है। गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम द्वारा 5वीं शताब्दी में (लगभग 427 ई.) स्थापित यह विश्वविद्यालय लगभग 800 वर्षों तक ज्ञान की उपासना का वैश्विक केंद्र रहा। नालंदा केवल ईंट-पत्थरों का ढांचा नहीं था, बल्कि यह एक विचार था—यह विचार कि ज्ञान पर किसी एक राष्ट्र, धर्म या जाति का एकाधिकार नहीं हो सकता। यह शोध पत्र यह पड़ताल करता है कि कैसे नालंदा ने शिक्षा के माध्यम से 'अंतर्राष्ट्रीय शांति और सद्भाव' को बढ़ावा दिया और आज के विश्वविद्यालयों के लिए यह किस प्रकार प्रासंगिक हो सकता है।

नालंदा: 'वसुधैव कुटुम्बकम' का जीवंत और व्यावहारिक स्वरूप

नालंदा महाविहार ने 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा को संस्थागत रूप दिया था। यह सही अर्थों में दुनिया का पहला "अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय" था। ऐतिहासिक साक्ष्यों और चीनी यात्री ह्वेनसांग (Xuanzang) तथा इत्सिंग (Yijing) के वृत्तांतों से

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

पता चलता है कि यहाँ केवल भारतीय छात्र ही नहीं, बल्कि चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, मंगोलिया, तुर्की, फारस और श्रीलंका के विद्वान एक ही छत के नीचे विद्या ग्रहण करते थे। उस समय जब यातायात और संचार के साधन अत्यंत सीमित और खतरनाक थे, तब हजारों मील की यात्रा करके इन छात्रों का नालंदा आना यह सिद्ध करता है कि ज्ञान की प्यास सीमाओं को नहीं मानती। नालंदा ने एक 'वैश्विक ज्ञान परिवार' का निर्माण किया था जहाँ छात्रों के बीच राष्ट्रीयता के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था। भोजन, आवास, चिकित्सा और वस्त्र सभी के लिए निःशुल्क थे, जिसका वहन तत्कालीन राजाओं और समाज द्वारा दिए गए दान से होता था। यह व्यवस्था बताती है कि समाज का दायित्व शिक्षा के प्रति कितना गहरा था यहाँ विभिन्न संस्कृतियों का मिलन होता था, जिससे एक वैश्विक सौहार्द का वातावरण निर्मित होता था।

उच्च शिक्षा की प्रणाली: गुणवत्ता, पाठ्यक्रम और शिक्षण विधि

नालंदा की शैक्षणिक गुणवत्ता और संरचना आधुनिक विश्वविद्यालयों के लिए भी अनुकरणीय है। यहाँ की व्यवस्था "उत्कृष्टता" पर आधारित थी। नालंदा में भीड़ को नहीं, बल्कि गुणवत्ता को महत्व दिया जाता था। प्रवेश पाना अत्यंत कठिन था। विश्वविद्यालय के चार द्वारों पर 'द्वार-पंडित' नियुक्त होते थे, जो प्रवेश के इच्छुक छात्रों की कठिन मौखिक परीक्षा लेते थे। ह्वेनसांग लिखते हैं कि 10 में से केवल 2 या 3 छात्र ही इस परीक्षा में सफल हो पाते थे। यह कठोर प्रक्रिया सुनिश्चित करती थी कि केवल गंभीर और मेधावी छात्र ही संघ में प्रवेश करें। आज हम 'नई शिक्षा नीति (NEP 2020)' में जिस बहु-विषयक शिक्षा की बात करते हैं, नालंदा ने उसे सदियों पहले लागू कर दिया था। यद्यपि यह एक बौद्ध विहार था, लेकिन यहाँ का पाठ्यक्रम केवल धर्म तक सीमित नहीं था। यहाँ 'पंचविद्या' अनिवार्य थी—जिसमें शब्दविद्या (व्याकरण), हेतुविद्या (तर्कशास्त्र), चिकित्साविद्या (आयुर्वेद), शिल्पस्थानविद्या (कला और वास्तुकला) और अध्यात्मविद्या (दर्शन) शामिल थे। इसके अतिरिक्त, गणित और खगोल विज्ञान का भी गहरा अध्ययन होता था। आर्यभट्ट जैसे महान गणितज्ञ का इस संस्थान से जुड़ाव यह बताता है कि यहाँ विज्ञान और आध्यात्मिकता साथ-साथ चलते थे। नालंदा की शिक्षण पद्धति एकतरफा व्याख्यान पर आधारित नहीं थी, बल्कि यह संवाद और तर्क पर केंद्रित थी। 'शास्त्रार्थ' यहाँ की शिक्षा का मूल आधार था। छात्रों को अपने गुरुओं से प्रश्न पूछने और प्रचलित सिद्धांतों को चुनौती देने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। यह पद्धति छात्रों में 'समालोचनात्मक चिंतन' विकसित करती थी। शिक्षक और छात्र का अनुपात (1:10) बहुत आदर्श था, जिससे व्यक्तिगत मार्गदर्शन संभव होता था।

नालंदा का ध्वंस: ज्ञान और मानवता की वैश्विक क्षति

नालंदा का इतिहास केवल सृजन का नहीं, बल्कि एक अत्यंत दुखद विध्वंस का भी साक्षी है, जो हमें इतिहास से सीखने की चेतावनी देता है। 12वीं शताब्दी (लगभग 1193 ई.) में बख्तियार खिलजी के आक्रमण ने इस महान ज्ञान केंद्र को नष्ट कर दिया। ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, नालंदा के विशाल पुस्तकालय क्षेत्र 'धर्मगंज'—जिसमें रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरंजक नामक तीन विशाल भवन थे—को जला दिया गया। कहा जाता है कि यहाँ 90 लाख से अधिक पांडुलिपियाँ थीं, जो तीन महीने तक जलती रहीं। यह केवल कागज या भोजपत्र का जलना नहीं था, बल्कि यह गणित, तर्कशास्त्र, खगोल विज्ञान और आयुर्वेद के सदियों पुराने संचित ज्ञान का जलना था। यह घटना हमें सिखाती है कि असहिष्णुता किसी भी सभ्यता के लिए कितनी घातक हो सकती है। 'विकसित भारत @2047' के संदर्भ में, यह इतिहास हमें 'ज्ञान की सुरक्षा' और अपनी सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण के प्रति सतर्क रहने की चेतावनी देता है। नालंदा की राख से हमें यह सबक मिलता है कि एक विकसित राष्ट्र बनने के लिए हमें अपनी ज्ञान परंपराओं की रक्षा करनी होगी।

'विकसित भारत @2047' के लिए नालंदा की प्रासंगिकता

वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य में नालंदा के मॉडल को आधुनिक संदर्भ में अपनाना आवश्यक है: वैश्विक ज्ञान केंद्र जिस प्रकार नालंदा ने प्राचीन काल में भारत को 'विश्वगुरु' बनाया, उसी प्रकार आज भारत अपनी उच्च शिक्षा

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

प्रणाली को सुदृढ़ करके पुनः विश्व का नेतृत्व कर सकता है। हमें अपने विश्वविद्यालयों को विदेशी छात्रों के लिए आकर्षक बनाना होगा, जिससे भारत की 'सॉफ्ट पावर' बढ़ेगी।नैतिक नेतृत्व और मानवीय मूल्य: नालंदा की शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं था, बल्कि 'शील' का निर्माण करना था। विकसित भारत को ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है जो तकनीकी रूप से सक्षम हों, लेकिन मानवीय मूल्यों और नैतिकता से ओत-प्रोत हों। शांति और सहिष्णुता: "वसुधैव कुटुम्बकम" के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय शांति की स्थापना तभी संभव है जब हम शिक्षा के माध्यम से सहिष्णुता और आपसी समझ को बढ़ावा दें। नालंदा ने दिखाया कि विविधता में एकता कैसे स्थापित की जा सकती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, नालंदा महाविहार मानव इतिहास में शिक्षा का एक स्वर्णिम अध्याय है। इसने सिद्ध किया कि शिक्षा वह माध्यम है जो राष्ट्रों की सीमाओं को मिटाकर पूरी मानवता को एक परिवार ("वसुधैव कुटुम्बकम") के सूत्र में पिरो सकती है। 'विकसित भारत @2047' का सपना केवल आर्थिक प्रगति और गगनचुंबी इमारतों से पूरा नहीं होगा, बल्कि इसके लिए हमें नालंदा जैसी बौद्धिक और सांस्कृतिक ऊंचाइयों को पुनः प्राप्त करना होगा। आज की उच्च शिक्षा को नालंदा से प्रेरणा लेते हुए समावेशी, तर्कसंगत और मानवीय बनना होगा। हमें अपनी जड़ों से जुड़कर ही आकाश को छूना होगा, तभी हम विश्व में शांति, सद्भाव और ज्ञान का प्रकाश फैला सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

मुखर्जी, राधा कुमुद (1947). प्राचीन भारतीय शिक्षा: ब्राह्मणवादी और बौद्ध. मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली. सांकलिया, एच. डी. (1934). नालंदा विश्वविद्यालय. ओरिएंटल पब्लिशर्स, मद्रास.

बील, सैमुअल (1884). सी-यू-की: पश्चिमी दुनिया के बौद्ध रिकॉर्ड (ह्वेनसांग का यात्रा वृत्तांत). ट्रुब्नर एंड कंपनी, लंदन.

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली.

सेन, अमर्त्य (2005). द आर्गुमेंटेटिव इंडियन (तर्कशील भारतीय). पेंगुइन बुक्स.

झा, डी. एन. (2004). प्राचीन भारत: एक संक्षिप्त इतिहास. मनोहर पब्लिशर्स.